रविवार 28 जून, 2026

विषय — क्रिश्चियन साइंस

स्वर्ण पाठ: यूहन्ना **8 : 3**

"और सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता **67 : 1-4, 6**

यशायाह **42 : 1, 4**

1 परमेश्वर हम पर अनुग्रह करे और हम को आशीष दे; वह हम पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए
2 जिस से तेरी गति पृथ्वी पर, और तेरा किया हुआ उद्धार सारी जातियों में जाना जाए।
3 हे परमेश्वर, देश देश के लोग तेरा धन्यवाद करें; देश देश के सब लोग तेरा धन्यवाद करें॥
4 राज्य राज्य के लोग आनन्द करें, और जयजयकार करें, क्योंकि तू देश देश के लोंगों का न्याय धर्म से करेगा, और पृथ्वी के राज्य राज्य के लोगों की अगुवाई करेगा॥
6 भूमि ने अपनी उपज दी है, परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उसने हमें आशीष दी है।
1 मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है; मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह अन्यजातियों के लिये न्याय प्रगट करेगा।
4 वह न थकेगा और न हियाव छोड़ेगा जब तक वह न्याय को पृथ्वी पर स्थिर न करे; और द्वीपों के लोग उसकी व्यवस्था की बाट जाहेंगे॥

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 51 : 1, 3-5, 11, 12 (से :)

1 हेधर्म पर चलने वालो, हे यहोवा के ढूंढ़ने वालो, कान लगाकर मेरी सुनो; जिस चट्टान में से तुम खोदे गए और जिस खानि में से तुम निकाले गए, उस पर ध्यान करो।
3 यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है, उसने उसके सब खण्डहरों को शान्ति दी है; वह उसके जंगल को अदन के समान और उस के निर्जल देश को यहोवा की बाटिका के समान बनाएगा; उस में हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा॥
4 हे मेरी प्रजा के लोगो, मेरी ओर ध्यान धरो; हे मेरे लोगो, कान लगाकर मेरी सुनो; क्योंकि मेरी ओर से व्यवस्था दी जाएगी, और मैं अपना नियम देश देश के लोगों की ज्योति होने के लिये स्थिर करूंगा।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

5 मेरा छुटकारा निकट है; मेरा उद्धार प्रगट हुआ है; मैं अपने भुजबल से देश देश के लोगों का न्याय करूंगा। द्वीप मेरी बाट जाहेंगे और मेरे भुजबल पर आशा रखेंगे।
11 सो यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिय्योन में आएंगे, और उनके सिरों पर अनन्त आनन्द गूंजता रहेगा; वे हर्ष और आनन्द प्राप्त करेंगे, और शोक और सिसकियों का अन्त हो जाएगा॥
12 मैं, मैं ही तेरा शान्तिदाता हूं।

2. मत्ती 9 : 35

35 और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उन की सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।

3. मत्ती 12 : 10-23

10 और देखो, एक मनुष्य था, जिस का हाथ सूखा हुआ था; और उन्होंने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा, कि क्या सब्त के दिन चंगा करना उचित है?
11 उस ने उन से कहा; तुम में ऐसा कौन है, जिस की एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले?
12 भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है; इसलिये सब्त के दिन भलाई करना उचित है: तब उस ने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा।
13 उस ने बढ़ाया, और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया।
14 तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें?
15 यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिये; और उस ने सब को चंगा किया।
16 और उन्हें चिताया, कि मुझे प्रगट न करना।
17 कि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो।
18 कि देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैं ने चुना है; मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है: मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा; और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा।
19 वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा।
20 वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धूआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए।
21 और अन्यजातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी।
22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।
23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?

4. मत्ती 21 : 23-27

23 वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था, कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है?

24 यीशु ने उन को उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा; कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।
25 यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था? तब वे आपस में विवाद करने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह हम से कहेगा, फिर तुम ने उस की प्रतीति क्यों न की?
26 और यदि कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें भीड़ का डर है; क्योंकि वे सब युहन्ना को भविष्यद्वक्ता जानते हैं।
27 सो उन्होंने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते; उस ने भी उन से कहा, तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूं।

5. यशायाह **60 : 1-3, 18, 19**

1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
2 देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।
3 और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥
18 तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात वा अन्धेर की चर्चा न सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहरपनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी।
19 फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा।

6. इफिसियों **5 : 8, 10, 13, 14**

8 क्योंकि तुम तो पहले अन्धकार थे परन्तु अब प्रभु में ज्योति हो, सो ज्योति की सन्तान की नाईं चलो।
10 और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है
13 पर जितने कामों पर उलाहना दिया जाता है वे सब ज्योति से प्रगट होते हैं, क्योंकि जो सब कुछ को प्रगट करता है, वह ज्योति है।
14 इस कारण वह कहता है, हे सोने वाले जाग और मुर्दों में से जी उठ; तो मसीह की ज्योति तुझ पर चमकेगी॥

7. यूहन्ना **16 : 12-14**

12 मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।
13 परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।
14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 7 : 1-2

अनंत पर टिके रहने वालों के लिए आज का दिन आशीर्वाद के साथ बड़ा है।

2. 26 : 14-18

ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम ने पाप, बीमारी और मृत्यु पर यीशु को अधिकार दिया। उनका मिशन आकाशीय विज्ञान को प्रकट करना था, यह साबित करने के लिए कि ईश्वर क्या है और वह मनुष्य के लिए क्या करता है।

3. 398 : 13-15

सूखे हाथ से पीड़ित से, " "अपना हाथ बढ़ा", और वह "फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया।"

4. 394 : 28-14

हमें याद रखना चाहिए कि जीवन ईश्वर है, और यह कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है। क्रिश्चियन साइंस को न समझकर, बीमारों को आम तौर पर इस पर बहुत कम विश्वास होता है जब तक कि वे इसके लाभकारी प्रभाव को महसूस नहीं करते हैं। इससे पता चलता है कि विश्वास ऐसे मामलों में मरहम लगाने वाला नहीं है। बीमार अनजाने में इसके खिलाफ होने के बजाय दुख का पक्ष लेते हैं। वे इसकी वास्तविकता को स्वीकार करते हैं, जबकि उन्हें इससे इनकार करना चाहिए। उन्हें धोखेबाज इंद्रियों की गवाही के विरोध में प्रार्थना करनी चाहिए, और भगवान के लिए मनुष्य की अमरता और शाश्वत समानता को बनाए रखना चाहिए।

महान एग्जम्पलर की तरह, मरहम लगाने वाले को बीमारी के बारे में बोलना चाहिए, क्योंकि आत्मा को कॉरपोरेट इंद्रियों के झूठे सबूतों को साबित करने और मृत्यु दर और बीमारी पर अपने दावों को साबित करने के लिए छोड़ देना चाहिए। एक ही सिद्धांत पाप और बीमारी दोनों को ठीक करता है। जब दैवीय विज्ञान एक कार्तिक मन में विश्वास को खत्म कर देता है, और भगवान में विश्वास पाप में और उपचार के भौतिक तरीकों में सभी विश्वासों को नष्ट कर देता है, तो पाप, बीमारी और मृत्यु गायब हो जाएगी।

5. 342 : 18-26

क्या इस बात से इनकार किया जाएगा कि जो प्रणाली शास्त्रों के अनुसार काम करती है, उसमें शास्त्रीय अधिकार होता है**?**

क्रायश्चियन साइंस पापी व्यक्ति को जगाता है, काफिरों की याद दिलाता है, और असहाय अमान्य आदमी को दर्द के सोफे से उठाता है। यह गूंगे को सत्य के शब्द बोलते हैं, और वे आनन्द के साथ उत्तर देते हैं। यह बहरे को सुनने के लिए, लंगड़े के लिए चलने के लिए और अंधे को देखने का कारण बनता है।

6. 381 : 20-30

नश्वर मन के अधिनियमों के बारे में कम सोचें, और आप जल्द ही मनुष्य के ईश्वर प्रदत्त प्रभुत्व को प्राप्त करेंगे। आपको स्वास्थ्य से जुड़ी मानवीय सिद्धांतों से बाहर जाने का रास्ता समझना होगा, अन्यथा आप कभी विश्वास नहीं कर पाएंगे कि आप किसी रोग से पूरी तरह मुक्त हैं। मानव का सद्भाव और अमरता कभी नहीं मिल सकती, जब

तक यह समझ न आ जाए कि मन पदार्थ में नहीं है। आइए हम बीमारी को एक नियम की तरह दूर भगा दें, और हमेशा एकता के नियम का पालन करें,—अर्थत भगवान का नियम। यह इंसान का नैतिक अधिकार है कि वह गलत सज़ा को रद्द कर दे, ऐसी सज़ा जो कभी भगवान ने नहीं दी।

7. 52 : 23-28

ईश्वर की सर्वोच्च सांसारिक प्रतिनिधि, ईश्वरीय शक्ति को प्रतिबिंबित करने की मानवीय क्षमता की बात करते हुए, केवल अपने युग के लिए नहीं, बल्कि सभी युगों के लिए, अपने शिष्यों से कहा। "कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा;" और "और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह होंगे कि वे।"

8. 328 : 28 (यीशु का)-13

यीशु का वचन हमेशा रहने वाला है। अगर यह सिर्फ़ उनके करीबी शिष्यों को दिया गया होता, तो धर्मग्रंथ का अंश लिखता आप, वे नहीं। उनके महान जीवन-कार्य का उद्देश्य समय के साथ फैला हुआ है और इसमें पूरी दुनिया की इंसानियत शामिल है। इसका सिद्धांत अनंत है, जो किसी एक समय या सीमित अनुसरण की सीमा से परे है। जैसे-जैसे समय आगे बढ़ेगा, शुद्ध ईसाइयत के उपचारात्मक तत्वों से निष्पक्ष रूप से निपटा जाएगा; उन्हें खोजा और सिखाया जाएगा, और वे दुनिया भर की अच्छाई की शान में चमकेंगे।

थोड़ा सा लेवन पूरे गांठ को काट देता है। क्रिश्चियन साइंस की थोड़ी सी समझ इस बात का सच साबित करती है कि मैं इसके बारे में कहता हूं। चूँकि आप पानी पर चलकर मरे हुओं को ज़िंदा नहीं कर सकते, इसलिए आपको इन दिशाओं में ईश्वरीय विज्ञान की महान शक्ति पर सवाल उठाने का कोई अधिकार नहीं है। शुक्र मनाइए कि ईसा मसीह, जो विज्ञान के सच्चे प्रदर्शक थे, ने ये सब किया और हमारे लिए अपना आदर्श छोड़ा। विज्ञान में हम केवल वही प्रयोग कर सकते हैं जो हम समझते हैं। हमें अपने विश्वास को प्रदर्शन द्वारा सिद्ध करना होगा।

9. 41 : 22-25

यीशु ने क्रिश्चियन साइंस को समझने से पहले ही इसका स्वागत देख लिया था, लेकिन इस पहले से जानकारी ने उन्हें कोई बाधा नहीं दी। उन्होंने अपना ईश्वरीय उद्देश्य पूरा किया, और फिर पिता के दाहिने हाथ बैठ गए।

10. 147 : 24-29

हमारे मास्टर ने बीमारों को चंगा किया, ईसाई उपचार का अभ्यास किया, और अपने छात्रों को इसके दिव्य सिद्धांत की सामान्यताओं को सिखाया; लेकिन उन्होंने बीमारी को ठीक करने और रोकने के इस सिद्धांत को प्रदर्शित करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं छोड़ा। ईसाई विज्ञान में इस नियम की खोज की जानी बाकी थी।

11. 123 : 16-27

क्रिश्चियन साइंस शब्द का प्रयोग लेखक द्वारा दिव्य उपचार की वैज्ञानिक प्रणाली को नामित करने के लिए किया गया था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

इस रहस्योद्घाटन में दो भाग शामिल हैं:

1. मन-चिकित्सा के इस दिव्य विज्ञान की खोज, शास्त्रों की आध्यात्मिक समझ और सांत्वनादाता की शिक्षाओं के माध्यम से, जैसा कि गुरु ने वादा किया था।

2. वर्तमान प्रदर्शन से यह सिद्ध होता है कि यीशु के तथाकथित चमत्कार विशेष रूप से किसी ऐसे युग से संबंधित नहीं थे जो अब समाप्त हो चुका है, बल्कि वे एक सदैव क्रियाशील ईश्वरीय सिद्धांत को दर्शाते हैं।

12. 127 : 14-29

तथापि, यह कहा जा सकता है कि क्रिश्चियन साइंस शब्द खास तौर पर मानवता पर लागू होने वाले साइंस से जुड़ा है। ईसाई विज्ञान ईश्वर को पाप, बीमारी और मृत्यु के लेखक के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वरीय सिद्धांत के रूप में प्रकट करता है, सर्वोच्च व्यक्ति, मन, सभी बुराई से मुक्त। यह सिखाता है कि पदार्थ अस्तित्व का तथ्य नहीं, असत्य है; कि नसों, मस्तिष्क, पेट, फेफड़े, आदि में - पदार्थ के रूप में - कोई बुद्धि, जीवन या संवेदना नहीं है।

क्योंकि सभी सत्य दिव्य मन से आगे बढ़ते हैं इसलिए कोई भौतिक विज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य मानव नहीं है और यह सामग्री का नियम नहीं है, क्योंकि सामग्री कानून का दाता नहीं है। विज्ञान दिव्य मन का एक प्रतीक है और केवल भगवान की व्याख्या करने में सक्षम है। इसकी एक आध्यात्मिक उत्पत्ति है और एक सामग्री नहीं है। यह एक दिव्य उच्चारण है, दिलासा देने वाला जो सभी सत्य का नेतृत्व करता है।

13. 311 : 22-25

जब मानवता इस विज्ञान को समझती है, तो यह मनुष्य के लिए जीवन का नियम बन जाएगा, - यहां तक कि आत्मा का उच्च नियम, जो सद्भाव और अमरता के माध्यम से भौतिक अर्थों पर हावी है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6